Psychology MJC+MIC -3 Semester- 3

समाजीकरण में

साथी समूह का योगदान

The role of the peer group in socialization

डॉ०अमर भारती सहायक प्राध्यापक N.D. कॉलेज

POSTER MAKER Poster Maker

4.3.3. समाजीकरण के एक अभिकरण के रूप में साथी समूह (Peer as an Agency of Socialisation)

बच्चे स्वभाव से ही मिलनसार तथा सामाजिक होते हैं। एक बालक के लिए सबसे दुःखद घड़ी तब होती है जब उसको उसके सहयोगियों से अलग कर दिया जाता है। वह अपने समूह विशेष में अपनी प्रतिष्ठा तथा अपने साथियों का साथ चाहता है। इसलिए माता–पिता, अध्यापकों तथा समाज के सभी उत्तरदायी सदस्यों का सदैव यह प्रयत्न रहना चाहिए कि बालक का पूरी तरह अपने समुदाय और साथी समूह में अच्छा तालमेल बना रहे जिससे उसका मानसिक स्वास्थ्य बना रहे। साथी–समूह बालकों के समाजीकरण एवं मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में निम्न प्रकार से सहयोग करते हैं–

1. **चिन्तन एवं कल्पना शक्ति का विकास**–समूह में रहकर बालक में चिन्तन शक्ति का विकास होता है जो आगे चलकर उनमें कल्पनात्मक योग्यता का विकास करती

है। समूह में आपसी विचार–विमर्श होते हैं इस प्रक्रिया में बालक खुलकर प्रतिभाग लेता है तथा अपने विचारों को व्यक्त करता है और दूसरों के विचारों पर प्रतिक्रिया भी करता है जिससे उसमें चिन्तन एवं कल्पना शक्ति का विकास होता है जो उसके मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक है।

2) **प्रतियोगिता एवं सहयोग की भावना का विकास**–साथी–समूहों में रहकर बालक अपने साथियों के साथ विभिन्न प्रकार के खेल खेलते हैं। इन खेलों से घर बैठे–बैठे उनका मनोरंजन तो होता ही है साथ ही साथ बालक की मानसिक योग्यताओं के विकास में काफी सहायता मिलती है। समूह में श्रेष्ठता प्रदर्शित करने के लिए वे पूरी लगन से इन खेलों में प्रतिभाग लेते हैं तथा प्रथम स्थान प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार उनमें प्रतियोगिता एवं सहयोग की भावना का भी विकास होता है जो उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं।

3) **तनाव से मुक्ति**–बालक समूह में रहकर अन्य बालकों से अन्तःक्रियाएँ करता है। ये अतःक्रियाएँ कभी गम्भीर व जटिल विषयों पर तो कभी हास्यपद विषयों से सम्बन्धित होती हैं परिणामस्वरूप तनाव दूर होता है और मानसिक स्वास्थ्य बना रहता है।

4) **प्रत्यक्षीकरण**–समूहों का हिस्सा बनकर बालक में प्रत्यक्षीकरण की समझ उत्पन्न हो जाती है। प्रत्यक्षीकरण एक ज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है। इसके द्वारा किसी उपस्थित व्यक्ति या वस्तु का ज्ञान प्राप्त होता है। प्रत्यक्षीकरण की समझ के कारण ही बालक सही और गलत में भेद कर पाता है और बालक का मानसिक विकास होता है।

5) **परिवर्तनशील समाज में अनुकूलन**–प्रारम्भ में बालक किसी न किसी समूह का सदस्य होता है। इस समूह में गुप्त भाषा, सदस्यता के नियम, बैठकों की जगह, नेता और क्रियाओं के विशेष प्रयोजन दिखलाई पड़ते हैं, सदस्यगण समूह के प्रति स्वामिभक्ति दिखलाते हैं। समूह में बालक स्वतन्त्रता का अनुभव करता है और समूह के नेता द्वारा बताए हुए मार्ग पर चलता है। यही समूह आगे जाकर वयस्क आयु में तरह–तरह की सभा–समाज के प्रतिमान उपस्थित करते हैं।

6) **तार्किक क्षमता का विकास**–समूह बालक की तर्क क्षमता का विकास करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समूह में रहकर बालक के सामने अनेक प्रकार की समस्याएँ आती हैं उनका समाधान करने के लिए योग्यता की आवश्यकता होती है। सोचने–विचारने और तर्क करने की शक्ति ही समस्या के समाधान में सहायक सिद्ध होती है जो समूह अन्तःक्रिया से ही बालक ग्रहण करता है।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर हम देखते हैं कि साथी समूह बालक में प्रत्यक्षीकरण, चिन्तन, तर्क, स्मृति एवं बुद्धि तथा मानसिक क्रियाओं के विकास में सहायक हैं। समूह बालक को समाज में अनुकूलन के लिए तैयार करते हैं। उनमें सहयोग एवं प्रतियोगिता की भावना का विकास करते हैं। समूह या साथी बालकों का सामाजिक, मानसिक एवं भावात्मक विकास करके उसे सामाजिक प्राणी बनाते हैं।

इस प्रकार सहकर्मी समूह बच्चे को स्वयं मित्र बनाने एवं निर्णय लेना सीखाते हैं। बच्चे अपने बड़ों के निर्देशों के बिना स्वयं को बातचीत, प्रभुत्व, नेतृत्व, सहयोग, समझौता आदि जैसी विभिन्न रणनीतियों को शामिल करते हैं। समकक्ष समाजीकरण उन्हें समूह अंतःक्रिया की बारीकियों को समझने तथा उसके अनुसार कार्य करने की क्षमता से सुसज्जित करता है।